चौबीस

मुकाबला, क्षमा और मेल

Confrontation, Forgiveness and Reconciliation

पहले के अध्याय में यीशु के पहाड़ी उपदेश पर अध्ययन करने से हमने यह सीखा था कि हमारे विरुद्ध पाप करनेवालों को क्षमा करना कितना महत्वपूर्ण है। यदि हम उन्हें क्षमा न करें, तो यीशु ने हमसे प्रतिज्ञा की है कि परमेश्वर भी हमें क्षमा नहीं करेगा (देखें मत्ती 6:14-15)।

किसी को क्षमा करने का क्या अर्थ है? आइये धर्मशास्त्र इस बारे में जो सिखाता है उस पर विचार करें।

यीशु ने क्षमा की तुलना किसी के ऋण को मिटा देने से की है (देखें मत्ती 18:23-35)। कल्पना करें कि किसी ने आप से धन उधार लिया है और आप उसे उस ऋण के बन्धन से मुक्त कर देते हैं। जिस दस्तावेज में उसके द्वारा लिये गए ऋण का विवरण है आपने उसे भी समाप्त कर दिया है। अब आपको अपनी धन वापसी की कोई आशा नहीं है, और आप अपने ऋणी से क्रोधित नहीं हैं। अब आप उसे उस समय समय से भिन्न देखते हैं जब उसने आपसे धन ऋण पर लिया था।

यदि परमेश्वर द्वारा क्षमा किये जाने पर विचार करें तो हम क्षमा करने के अर्थ को अच्छी तरह से समझ सकते हैं। जब वह हमारे किसी पाप को क्षमा करता है, तो वह हमें उस पाप के लिए स्वयं को नाराज़ करने का उत्तरदायी नहीं ठहराता। वह उस पाप के कारण हम से अधिक समय तक क्रोधित नहीं रहता जो हमने किया है उसके लिए न तो वह हमें अनुशासित करेगा और न ही दण्डित। हमारा उस से मेल हो गया है।

इसी तरह से यदि मैंने सच में किसी को क्षमा कर दिया है, तो मैंने अपने भीतर की बदले की भावना का स्थान करुणा को दे दिया है। मेरे विरुद्ध पाप करनेवाले

के प्रति मैं अब क्रोधित नहीं हूं। हमारा मेल हो गया है। *यदि मैं किसी के विरुद्ध क्रोध या कुड़कुड़ाहट को रखता हूं, तो मैंने उसे क्षमा नहीं किया है।*

मसीही प्राय: इस संदर्भ में स्वयं को मूर्ख बनाते हैं। यह जानते हुए कि उनसे ऐसा करने की आशा की जाती है, वे कहते हैं कि उन्होंने अमुक व्यक्ति को क्षमा कर दिया है, परन्तु उनके भीतर अपराधी के प्रति रोष और कुड़कुड़ाहट पाई जाती है। वे अपराधी को देखने से बचते हैं क्योंकि इससे उनका क्रोध फिर से जागृत होता है। मैं जानता हूं कि मैं किस बारे में बात कर रहा हूं, क्योंकि मैंने भी ऐसा ही किया है। आइये स्वयं को मूर्ख न बनाएं। स्मरण रखें कि यीशु हमसे यह भी नहीं चाहता कि हम अपने सह-विश्वासी से क्रोधित हों (देखें मत्ती 5:22)।

अब मैं आपसे एक प्रश्न पूछता हूं- किसे क्षमा करना सरल हैं, एक अपराधी को जो क्षमा मांगता है या वह अपराधी जो क्षमा नहीं मांगता? बेशक, हम सभी उस अपराधी के लिए सहमत होंगे, जो अपनी गलती मानकर क्षमा मांगता है। वास्तव में उसे क्षमा करना अधिक सरल लगता है जो क्षमा मांगता है, बजाय उसके जो क्षमा नहीं मांगता। जो क्षमा मांगने के लिए निवेदन नहीं करता उसे क्षमा करना असंभव लगता है।

आइये एक दूसरे दृष्टिकोण से इस पर विचार करें। क्या परमेश्वर हमसे प्रत्येक व्यक्ति को क्षमा करने की अपेक्षा करता है, उन्हें भी जो अपने आप को दीन नहीं करते, अपना पाप स्वीकार नहीं करते, या क्षमा नहीं मांगते?

पवित्रशास्त्र से एक आश्चर्य

A Surprise from Scripture

इस सबसे मेरे भीतर यह प्रश्न उत्पन्न होता है: क्या परमेश्वर हमसे उस प्रत्येक व्यक्ति को क्षमा करने की आशा करता है जिसने हमारे विरोध में पाप करने पर न तो अपने को दीन करते हुए हमसे क्षमा मांगी और न ही अपने पाप को स्वीकार किया?

धर्मशास्त्र का निकटता से अध्ययन करने पर हम जवाब ''नहीं'' में पाते हैं। अधिकांश मसीहियों को आश्चर्य में डालते हुए धर्मग्रंथ स्पष्ट करता है कि यद्यपि हमें प्रत्येक से प्रेम करने की आज्ञा दी गई है जिनमें हमारे शत्रु भी आते हैं, हमारे लिये प्रत्येक को क्षमा करना ज़रूरी नहीं है।

उदाहरण के लिए, क्या यीशु हमसे उस सह-विश्वासी को क्षमा करने की भी अपेक्षा करता है जिसने हमारे विरुद्ध पाप किया है? नहीं, वह ऐसा नहीं करता। अन्यथा वह हम से मत्ती 8:15-17 में फिर से मेल करने के चार चरणों का अनुसरण करने को नहीं कहता। वे चरण जिनका अन्त उस समय बहिष्कार करने से होता है जब अपराधी पश्चात्ताप नहीं करता:

> यदि तेरा भाई तेरा अपराध करे, तो जा और अकेले में बातचीत करके उसे समझा; यदि वह तेरी सुने तो तूने अपने भाई को पा लिया। और यदि वह न सुने, तो एक और दो जन को अपने साथ ले जा कि हर एक बात दो या तीन गवाहों के मुंह से ठहराई। जाए, यदि वह उनकी भी न माने तो तू उसे अन्यजाति और महसूल लेने वाले के ऐसा जान।

निस्संदेह यदि चौथा चरण बहिष्कार तक पहुंचता है, जिसमें अपराधी को क्षमा नहीं दी जाती है, क्योंकि क्षमा और बहिष्कार परस्पर विरोधी हैं। किसी को यह कहते सुनने में हैरानी होगी, ''हमने उसे क्षमा किया और उसके बाद हमने उसका बहिष्कार कर दिया,'' क्योंकि क्षमा का परिणाम मेल है न कि संबंध-विच्छेद। यदि परमेश्वर आपको यह कहे तो आप क्या सोचेंगे, ''मैंने तुम्हें क्षमा कर दिया है लेकिन अब से मुझे तुमसे कुछ लेना देना नहीं है।'' यीशु ने हमसे बहिष्कृत व्यक्ति के साथ एक अन्यजाति या महसूल लेने वाले के रूप में व्यवहार करने को कहा है, ये वे दो तरह के लोग थे जिनके साथ यहूदियों का कोई संबंध नहीं था।

उन चारों चरणों में जिनकी रूपरेखा यीशु ने दी है पहले, दूसरे और तीसरे चरणों के पश्चात् जब तक कि अपराधी पश्चात्ताप न करे क्षमा को नहीं दिया गया है। यदि वह किसी एक चरण के पश्चात् पश्चात्ताप नहीं करता, तो उसे अगले चरण पर लेकर जाया जाता है, जिसके साथ अभी भी एक पश्चात्ताप न करने वाले अपराधी के रूप में व्यवहार किया जाता है। केवल अपराधी के ''आपकी सुनने पर'' (अर्थात् पश्चात्ताप करने पर) यह कहा जा सकता है कि ''आपने अपने भाई को पा लिया है'' (अर्थात् मेल कर लिया है)।

इस तरह के मुकाबले का अर्थ यह है कि क्षमा को दिया जा सकता है, तथापि, अपराधी के पश्चात्ताप करने पर क्षमा की घोषणा को पहले से ही कर दिया गया है। अत: हम (1) इस आशा के साथ मुकाबला कर सकते हैं कि अपराधी (2) पश्चात्ताप करेगा जिससे (3) हम उसे क्षमा कर सकते हैं।

ऐसा होने पर हम निश्चयता के साथ कह सकते हैं कि परमेश्वर हमसे केवल हमारे सह विश्वासी को क्षमा न करने की अपेक्षा करता है बल्कि उसे भी जिसने हमारे विरुद्ध अपराध किया है। यह हमें बेशक, एक अपराधी विश्वासी को क्षमा करने का अधिकार नहीं देता। इसके विपरीत हम अपराधी का सामना इसलिए करते हैं क्योंकि हम अपराधी से प्रेम करते हैं और उसे क्षमा करना व उससे मेल करना चाहते हैं।

तौभी, यीशु द्वारा दी गई तीनों चरणों की रूपरेखा से मेल करने का किया गया प्रत्येक प्रयास मसीह की आज्ञाकारिता में संबंध को समाप्त कर देता है।[63] उसी तरह से जैसे हमें व्यभिचारी, पियक्कड़, लोभी इत्यादि जैसे मसीहियों के साथ सहभागिता

न रखने को कहा गया है (देखे 1कुरि. 5:11)। हमें उन मसीहियों के साथ भी कोई संबंध नहीं रखना जो पश्चात्ताप करने से इंकार कर देते हैं। इस तरह के लोग यह प्रमाणित करते हैं कि वे मसीह के सच्चे अनुयायी नहीं हैं और वे अपनी कलीसिया के लिए निन्दा लाते हैं।

परमेश्वर का उदाहरण

God's Example

जब हम दूसरों को क्षमा करने के अपने उत्तरदायित्व पर आगे विचार करते हैं तो हमें इस बात की हैरानी होती है कि परमेश्वर हमसे कुछ ऐसा करने की आशा क्यों करता है जिसे वह स्वयं नहीं करता है। निश्चय ही परमेश्वर दोषी लोगों से प्रेम करता है और उन्हें क्षमा देने के लिए वह अपने करुणा पूर्ण हाथों को बढ़ाता है। वह अपने क्रोध को रोककर उन्हें पश्चात्ताप करने का समय देता है। लेकिन उनके प्रापों का क्षमा किया जाना उनके पश्चात्ताप से जुड़ा होता है। *परमेश्वर दोषी लोगों को तब तक क्षमा नहीं करता जब तक वे पश्चात्ताप नहीं करते।* अत: हम उससे अपने लिए अधिक की अपेक्षा किये जाने पर क्यों विचार करें?

इस तरह से, यह संभव नहीं है कि क्षमाहीनता का पाप परमेश्वर की दृष्टि में बहुत ही कष्टदायक है, विशेष रूप से उन्हें क्षमा करने का जो हमसे क्षमा मांगते हैं। यह रोचक है कि कलीसियाई अनुशासन के चार चरणों की रूपरेखा को यीशु द्वारा दिये जाने के पश्चात् पतरस ने पूछा:

> ''हे प्रभु, यदि मेरा भाई अपराध करता रहे तो मैं कितनी बार उसे क्षमा करूं, क्या सात बार तक'' यीशु ने उससे कहा, ''मैं तुझ से यह नहीं कहता, कि सात बार, वरन सात बार के सत्तर गुने तक'' (मत्ती 18:21-22)।

क्या पतरस ने यह सोचा था कि यीशु उससे एक *अपश्चात्तापी* भाई को उसके सैकड़ों पापों के लिए सैकड़ों बार क्षमा करने की अपेक्षा कर रहा था जब कि यीशु ने कुछ क्षण पूर्व ही उसे एक *अपश्चात्तापी* भाई के साथ एक अन्यजाति या महसूल लेने वाले के समान व्यवहार करने को कहा था? यह बहुत ही प्रतिकूल लगता है। पुन:, यदि आपने एक व्यक्ति को क्षमा कर दिया है तो आपको उसके साथ घृणित व्यवहार नहीं करना है।

हमारी विचारधारा को उत्तेजित करने वाला एक अन्य प्रश्न है: यदि यीशु हम से एक ऐसे विश्वासी को उसके द्वारा किये गए सैकड़ों पापों के लिए सैकड़ों बार पाप क्षमा करने की अपेक्षा करता है जिनके लिए वह संबन्धों को बनाए रखने के लिए हमसे

63. इससे ऐसा लगता है कि यदि पूर्व में किये पाप से कोई पश्चात्ताप करता है तो यीशु यह आशा करता है कि उसे क्षमा दी जाए।

पश्चात्ताप नहीं करता है, तो फिर वह क्यों सिर्फ एक ही पाप अर्थात् व्यभिचार के पाप के कारण अपने जीवन साथी द्वारा पश्चात्ताप न किये जाने पर वैवाहिक संबंध को समाप्त करने की अनुमति देता है? (देखें मत्ती 5:32)।[64] यह प्रतिकूल प्रतीत होता है।

एक विस्तार

An Elaboration

यीशु द्वारा पतरस को एक भाई को चार सौ नब्बे बार क्षमा करने को कहा गया है। क्षमा करने के पश्चात् उसने पतरस को अपने अभिप्राय को समझाने के उद्देश्य से एक दृष्टांत सुनाया:

> इसलिए स्वर्ग का राज्य उस राजा के समान है, जिसने अपने दासों से लेखा लेना चाहा। जब वह लेखा लेने लगा तो एक जन उसके सामने लाया गया जो दस हज़ार तोड़े धारता था। (यीशु के दिनों में यह औसत मज़दूरी 5000 वर्षों की मज़दूरी के बराबर रही होगा) जबकि चुकाने को उसके पास कुछ न था, तो उसके स्वामी ने कहा, कि ''यह और इसकी पत्नी और लड़केवाले और जो कुछ इसका है सब बेचा जाए, और वह कर्ज़ चुका दिया जाए।'' इस पर उस दास ने गिरकर उसे प्रणाम किया और कहा, ''हे स्वामी, धीरज धर, मैं सब कुछ भर दूंगा। तब उस दास के स्वामी ने तरस खाकर उसे छोड़ दिया, और उसका उधार क्षमा किया। परंतु जब वह दास बाहर निकला, तो उसके संगी दासों में से एक उसको मिला जो उसके सौ दीनार धारता था; और उस ने उसे पकड़कर उसका गला घोंटा, और कहा, ''जो कुछ तू धारता है भर दे।'' इस पर उसका संगी गिरकर उससे विनती करने लगा; कि ''धीरज धर, मैं सब भर दूंगा। उसने न माना, परन्तु जाकर उसे बन्दीगृह में डाल दिया; कि जब तक कर्ज़ को भर न दे, तब तक वहीं रहे। उसके संगी दास यह जो हुआ था देखकर बहुत उदास हुए और जाकर अपने स्वामी को पूरा हाल बता दिया। तब उसके स्वामी ने उसको बुलाकर उससे कहा, ''हे दुष्ट दास, तू ने जो मुझसे विनती की, तो मैंने तो तेरा वह पूरा कर्ज़ क्षमा किया। सो जैसा मैंने तुझ पर दया की, वैसे ही क्या तुझे भी अपने संगी दास पर दया करना नहीं चाहिए था?'' और उसके स्वामी ने क्रोध में आकर उसे दण्ड देनेवालों के हाथ में सौंप दिया, कि जब तक वह सब कर्ज़ा भर न दे, तब तक उनके हाथ में रहे। इसी प्रकार यदि तुम

64. यदि जीवन साथी में से एक मसीही है तो तलाक से पूर्व हमें यीशु द्वारा अधोलिखित किये गये मेल के तीन चरणों से होकर उसे ले जाना चाहिए। यदि वह पश्चात्ताप करे, तो हमसे यीशु की आज्ञानुसार उसे क्षमा करने की आशा की गई है।

> में से हर एक अपने भाई को मन से क्षमा न करे तो मेरा पिता जो स्वर्ग में है, तुम से भी वैसा ही करेगा (मत्ती 18:23-35)।

ध्यान दें कि पहले दास को इसलिए माफ कर दिया गया था क्योंकि उसने अपने स्वामी से इसकी मांग की थी। इसके बाद ध्यान दें कि दूसरे दास ने भी बड़ी दीनता के साथ पहले सेवक से क्षमा को मांगा था। प्रथम सेवक ने दूसरे सेवक को वह नहीं दिया जो उसे प्राप्त हुआ था, और इसी चीज़ ने उसके स्वामी को क्रोधित कर दिया था। इस तरह से, पतरस सोच रहा होगा कि यीशु उससे एक ऐसे अपश्चात्तापी भाई को क्षमा करने की आशा कर रहा था जिसने कभी क्षमा की मांग नहीं की थी, एक ऐसी चीज़ जिसे यीशु के दृष्टांत में दिखाया नहीं गया था? यह प्रतिकूल प्रतीत होता है, और उस समय सबसे अधिक जबकि उसने पहले एक अपश्चात्तापी भाई के साथ अन्यजाति या महसूल लेने वाले के समान व्यवहार करने को कहा था।

यह और भी प्रतिकूल प्रतीत होता है कि पतरस ने यह सोचा होगा कि उससे दण्ड की रोशनी में एक अपश्चात्तापी भाई को क्षमा करने की अपेक्षा की गई थी जिसकी प्रतिज्ञा यीशु ने की थी, यदि हम अपने पूरे मन से अपने भाइयों को क्षमा नहीं करते। यीशु ने हमारे पहले क्षमा किये गए पापों को फिर से हम पर डालने और हमें तब तक सताने वालों के हाथों में देने की प्रतिज्ञा की है जब तक हम उसका भुगतान न कर दें जिसका भुगतान हम कभी नहीं कर सकते हैं। क्या यह उस मसीही के लिए उचित दण्ड होगा जो अपने भाई को क्षमा नहीं करता है, *एक भाई जिसे परमेश्वर भी क्षमा नहीं करता है?* यदि भाई मेरे विरुद्ध पाप करता है, तो वह परमेश्वर के विरुद्ध पाप करता है, और परमेश्वर उसके पश्चात्ताप न किये जाने तक उसे क्षमा नहीं करता। क्या परमेश्वर मुझे उस व्यक्ति को क्षमा करने के लिए दण्डित कर सकता है जिसे वह स्वयं क्षमा नहीं करता?

एक सारांश
A Synopsis

हमारे अपने सह-विश्वासियों को क्षमा करने के लिए यीशु की अपेक्षाएं लूका 17:3-4 में उसके शब्दों में संक्षिप्त रूप से दी गई हैं:

> सचेत रहो; यदि तेरा भाई अपराध करे तो उसे समझा, *और यदि पछताए तो उसे क्षमा कर।* यदि दिन भर में वह सात बार तेरा अपराध करे और सातों बार तेरे पास फिर आकर कहे कि "*मैं पछताता हूं*", तो उसे क्षमा कर (पर बल दिया गया है)।

इससे स्पष्ट और क्या हो सकता है? यीशु हमसे साथी विश्वासियों के पश्चात्ताप करने पर उन्हें क्षमा करने की अपेक्षा करता है, जब हम प्रार्थना करते हैं, "जिस

तरह से हम अपने अपराधियों को क्षमा करते हैं वैसे ही तू भी हमारे अपराधों को क्षमा कर,'' तब हम परमेश्वर से स्वयं के लिए वह करने को *कह* रहे होते हैं जिसे हमने दूसरों के लिए किया होता है। हम उससे तब तक क्षमा पाने की अपेक्षा नहीं कर सकते जब तक कि हम, उससे इसकी *मांग* नहीं करते। अत: हम यह क्यों सोचें कि वह हमसे उसे क्षमा करने की अपेक्षा क्यों करेगा जो जो इसकी *मांग* नहीं करता?

पुन:, यह सब हमें मसीह में उस भाई या बहन से घृणित व्यवहार करने का अधिकार नहीं देता जिसने हमारे विरुद्ध पाप किया है। इसी कारण हमें उस संगी विश्वासी का सामना करने को कहा गया है जिसने हमारे विरुद्ध पाप किया है, जिससे उसके साथ मेल हो और उसका उस परमेश्वर के साथ भी मेल हो जिसके विरोध में भी उसने पाप किया है। *यही कार्य प्रेम करता है।* तौभी, अक्सर मसीही इस तरह से कहते हैं कि उन्होंने एक अपराधी सह-विश्वासी को क्षमा कर दिया है, लेकिन यह उससे सामना करने से बचने का केवल एक बहाना है। वे वास्तव में क्षमा नहीं करते, और यह उनके कार्यों से स्पष्ट हो जाता है! वे हर कीमत पर अपराधी से बचते व उसे दुख पहुंचाने वाली बातें बोलते हैं। उनमें कोई मेल नहीं होता।

हमारे पाप करने पर परमेश्वर हममें वास करने वाले पवित्र आत्मा के द्वारा हमारा सामना करता है, क्योंकि वह हमसे प्रेम करता और हमें क्षमा करना चाहता है। हमें अपने विरुद्ध पाप करने वाले संगी विश्वासियों का सामना करते हुए परमेश्वर की नकल करनी चाहिए, इससे वहां पश्चात्ताप, मेल और क्षमा होगी।

परमेश्वर अपने लोगों से उदार प्रेम सहित एक दूसरे से प्रेम करने की अपेक्षा करता है, एक ऐसा प्रेम जो झिड़कता तो है परन्तु मैल नहीं रखता। मूसा की व्यवस्था में यह आज्ञा पाई जाती है:

> अपने मन में एक दूसरे के प्रति बैर न रखना, *अपने पड़ोसी को अवश्य डाँटना*, नहीं तो उसके पाप का भार तुझको उठाना पड़ेगा। पलटा न लेना और न अपने जाति भाइयों से बैर रखना, परन्तु *एक दूसरे से अपने सामन ही प्रेम रखना;* मैं यहोवा हूं (लैव्य. 19:17-18 पर बल दिया गया है)।

एक विरोध
An Objection

लेकिन मरकुस 11:25-26 में यीशु द्वारा कहे गए शब्दों के बारे में क्या है? क्या वे इस बात का संकेत नहीं देते कि हमें प्रत्येक को प्रत्येक चीज़ में क्षमा करना चाहिए, चाहे वह हमसे इसके लिए क्षमा मांगे या नहीं?

> और जब कभी तुम खड़े हुए प्रार्थना करते हो, तो यदि तुम्हारे मन में किसी की ओर से कुछ विरोध हो तो क्षमा करो; इसलिए कि तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा करें।

इस विषय पर हमने जिन पापों पर विचार किया है यह एकमात्र पद उन सभी का स्थान नहीं लेता। हम पहले से ही जानते हैं कि परमेश्वर को जो चीज़ पसंद नहीं है वह यह कि उस व्यक्ति को क्षमा न करने का हमारा इन्कार जो हमसे क्षमा मांगता है। इसलिए हम इस पद का अर्थ उस रोशनी में लगा सकते हैं जो इस सच्चाई को सही तरह से सामने रखता है। यीशु यहां केवल इस पर बल दे रहा है कि यदि हम परमेश्वर से क्षमा को चाहते हैं तो हमें केवल दूसरों को क्षमा करना है। वह हमें क्षमा की विशिष्ट तकनीकों को नहीं बता रहा है और यह कि एक व्यक्ति को दूसरे से इसे प्राप्त करने के लिए क्या करना चाहिए।

ध्यान दें कि यीशु यहां पर यह भी नहीं कहता कि हमें परमेश्वर से क्षमा प्राप्त करने के लिए इसकी मांग परमेश्वर से करनी चाहिए। तो क्या पवित्रशास्त्र क्षमा के बारे में और जो कुछ भी सिखाता है हमें उस हर चीज़ से बचना है (देखे मत्ती 6:12; यूह 1:9)? क्या हम यह मान लें कि हमारे पाप करने पर हमें परमेश्वर से क्षमा मांगने की ज़रूरत नहीं है, क्योंकि यहां यीशु इसका वर्णन नहीं करता है? जो कुछ पवित्रशास्त्र हमें बताता है यह उसके प्रकाश में एक मूर्खतापूर्ण अवधारणा होगी। यह उस प्रत्येक चीज़ को मूर्खतापूर्ण अस्वीकार करने के समानान्तर होगा जो पवित्रशास्त्र हमें दूसरों को क्षमा करने के उनके मांगने के आधार पर सिखाता है।

अन्य विरोध
Another Objection

यीशु ने उन सिपाहियों के लिए प्रार्थना नहीं की जो उसके वस्त्रों को बांट रहे थे, "हे पिता, इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये जानते नहीं कि क्या कर रहे हैं" (लूका 23:34)? ये क्या यह संकेत नहीं देता कि परमेश्वर लोगों के मांगने से पहले ही उन्हें क्षमा करता है?

वह ऐसा करता है, लेकिन एक निश्चित मात्रा में। यह संकेत देता है कि परमेश्वर भोलों पर अपनी करुणा को दिखाता है, जो कि क्षमा का एक माप है। चूंकि परमेश्वर पूरी तरह से न्यायी है, वह लोगों को केवल तब ही उत्तरदायी ठहराता है जब वे जान बूझकर पाप करते हैं।

सिपाहियों के लिए की गई यीशु की प्रार्थना स्वर्ग में उनके स्थान का आश्वासन नहीं देती है। यह केवल इस बात के लिए आश्वस्त करती है कि परमेश्वर के पुत्र के वस्त्रों का वितरण करने के कारण उन्हें दोषी नहीं ठहराया जाएगा; केवल इस कारण से कि वे उसके बारे में नहीं जानते कि वह कौन है। उन्होंने उसे प्राणदण्ड दिये जाने वाले एक अपराधी के रूप में ही देखा था। इसलिए परमेश्वर ने अपनी करुणा को एक ऐसे कार्य के लिए बढ़ाया था जिसके लिए वे न्याय किये जाने के योग्य ठहरते, यदि वे जानते कि वास्तव में वे क्या कर रहे थे।

लेकिन क्या यीशु ने यह प्रार्थना की कि परमेश्वर हर उस व्यक्ति को क्षमा करेगा जो किसी भी तरह से उसके दुख का कारण था? नहीं, उसने ऐसा नहीं किया। उदाहरण के लिए, यहूदा के संबन्ध में, यीशु ने कहा कि उसका जन्म ही न हुआ होता तो अच्छा होता (देखें मत्ती 26:24)। यीशु ने निश्चित ही यह प्रार्थना नहीं की कि उसका पिता यहूदा को क्षमा करे। इसके विपरीत, हम भजन संहिता 69 और 109 का अध्ययन यीशु की भविष्यसूचक प्रार्थनाओं के रूप में करें, जैसा पतरस ने किया था (देखें प्रेरित. 1:15-20)। यीशु ने प्रार्थना की कि न्याय यहूदा पर पड़ेगा, एक ऐसा व्यक्ति जो अपराध से अपरिचित न था।

मसीह की नकल करते हुए, हमें भी उनके प्रति करुणा दिखानी चाहिए जो इस बात से अनजान होते हैं कि उन्होंने हमारे साथ क्या किया है, अनजान सिपाहियों के समान गैर-विश्वासियों के साथ, जिन्होंने मसीह के वस्त्रों को बांटा था। यीशु अविश्वासियों के प्रति हमसे अत्यधिक करुणा दिखाने, अपने शत्रुओं से प्रेम करने, जो हमसे घृणा करते हैं उनके साथ भलाई करने, जो हमें शाप देते हैं उनके लिए प्रार्थना करने तथा जो हमसे गलत व्यवहार करते हैं उनके लिए प्रार्थना करने की अपेक्षा करता है (देखें लूका 6:27-28)। हमें बुराई पर भलाई से विजय पाते हुए उनकी घृणा को प्रेम में परिवर्तित करने का प्रयास करना चाहिए। मूसा की व्यवस्था में इस धारणा को दिया गया था:

> यदि तेरे शत्रु का बैल वा गदहा भटकता हुआ तुझे मिले, तो उसे उसके पास अवश्य ले आना। फिर यदि तू अपने बैरी के गदहे को बोझ के मारे दबा हुआ देखे, तो चाहे उसको उसके स्वामी के लिए छुड़ाने के लिए तेरा मन न चाहे, तौभी अवश्य स्वामी का साथ देकर उसे छुड़ा लेना (निर्ग. 23:4-5)।
>
> यदि तेरा बैरी भूखा हो तो उसको रोटी खिलाना; और यदि वह प्यासा हो तो उसे पानी पिलाना, क्योंकि इस रीति से तू उसके सिर पर अंगारे डालेगा, और यहोवा तुझे इसका फल देगा (नीति. 25:21-22)।

यह रोचक है कि यद्यपि यीशु ने हमें अपने बैरियों से प्रेम करने, जो हमसे घृणा करते हैं उनका भला करने, जो हमें शाप देते हैं उन्हें आशीष देने और जो हमारे साथ गलत व्यवहार करते हैं उनके लिए प्रार्थना करने की आज्ञा दी है (देखें लूका 6:27-28) तौभी, उसने हमें उनमें से किसी को भी क्षमा करने को नहीं कहा है। हम लोगों को क्षमा किये बिना भी उनसे प्रेम कर सकते हैं—जैसे परमेश्वर लोगों को क्षमा किये बिना उनसे प्रेम करता है। न केवल हम उनसे प्रेम कर सकते हैं, बल्कि हमें उनसे प्रेम करना भी चाहिये, क्योंकि हमें ऐसा करने की आज्ञा परमेश्वर द्वारा दी गई है। और उनके प्रति हमारा प्रेम हमारे कार्य के द्वारा प्रगट होना चाहिए।

यीशु द्वारा अपने पिता से उन सिपाहियों के लिए प्रार्थना करना जो उसके वस्त्रों को बांट रहे थे यह प्रमाणित नहीं करता कि इस विषय पर पवित्रशास्त्र में से हमने और जो कुछ भी पढ़ा है उसको अनदेखा करें तथा हमारे विरुद्ध पाप करने वाले प्रत्येक व्यक्ति को क्षमा करें। ये केवल हमें यह सिखाता है कि हमें यंत्रवत् रूप से उन्हें क्षमा करना चाहिए जो हमारे विरुद्ध किए गए अपने पाप से अनभिज्ञ होते हैं तथा यह भी कि हम गैर-विश्वासियों को अतिरिक्त करुणा दिखाएं।

यूसुफ के बारे में क्या है?

What About Joseph?

यूसुफ, जिसने अनुग्रहपूर्वक अपने उन भाइयों को क्षमा कर दिया था जिन्होंने उसे गुलामी में बेच दिया था—उसका प्रयोग कई बार इस उदाहरण के रूप में किया जाता है कि हमें उस व्यक्ति को जो हमारे विरुद्ध पाप करता है कैसे क्षमा करना चाहिए, चाहे क्षमा की मांग की गई हो या नहीं। लेकिन क्या यूसुफ की कहानी हमें इस बारे में सिखाती है?

नहीं, यह ऐसा नहीं करती।

यूसुफ ने अपने भाइयों को कम से कम एक वर्ष तक क्रमिक परीक्षण और जांच में रखा कि उन्हें पश्चात्ताप के स्थान पर लेकर आए। उसने अपने एक भाई को मिस्र में कई महीनों तक बन्दी बनाकर भी रखा (देखें उत्प. 42:24)। जब उसके भाई अन्ततः अपने दोष को जानने के योग्य हो गए (देखें उत्प. 42:21, 44:16), और जब उनमें से एक ने स्वयं को अपने पिता के प्रिय पुत्र के स्थान पर रखा (देखें उत्प 44:33), यूसुफ जान गया कि वे पहले के समान ईर्ष्यालू और स्वार्थी व्यक्ति नहीं रहे थे, जिन्होंने उसे गुलामी में बेचा था। केवल तब ही यूसुफ ने अपने आपको उन पर प्रगट किया और उनसे अनुग्रह के शब्द कहे जिन्होंने उसके विरुद्ध पाप किया था। यदि यूसुफ ने ''तत्काल'' ही उन्हें क्षमा कर दिया होता तो वे कभी पश्चात्ताप न करते। और यह ''तत्काल क्षमा किये जाना'' शिक्षा की एक कमी है जिसे आज सिखाया जाता है। हमारे विरुद्ध पाप करने वाले भाइयों को सामना कराए बिना क्षमा करने का परिणाम दो चीज़ों में होता है: (1) झूठी क्षमा जो मेल को लेकर नहीं आती, और (2) पश्चात्ताप न करने वाले अपराधी आत्मिक रूप में नहीं बढ़ते हैं।

मत्ती 8:15-17 का प्रयोग

The Practice of Matthew 18:15-17

यद्यपि मेल के विषय में यीशु द्वारा सूचीगत किये गए चारों चरणों को समझना सरल है, तौभी, उन पर कार्य करना अधिक जटिल हो सकता है। जब यीशु ने चारों

चरणों की रूप रेखा दी, तो उसने ऐसा इस दृष्टिकोण से किया कि जब भाई ''क'' यह मानता है कि भाई ''ख'' गलत हो सकता है। आइये एक ऐसी स्थिति की कल्पना करें जिसमें प्रत्येक संभावित दृश्य पर विचार किया गया है।

यदि भाई ''क'' यह मानता है कि भाई ''ख'' ने उसके विरुद्ध पाप किया है, तो सबसे पहले उसको निश्चित कर लेना चाहिए कि वह अपने भाई 'ख' की आंख में लट्ठे को ढूंढते हुए अधिक आलोचक नहीं बनेगा। बहुत से छाटे अपराधों को अनदेखा कर करुणा को बढ़ाया जा सकता है (देखें मत्ती 7:3-5)। तौभी, यदि भाई 'क' स्वयं में अपने भाई 'ख' के प्रति चिढ़ने को पाता है तो उसे उसका सामना करना चाहिए।

उसे यीशु की आज्ञा का पालन करते हुए तथा अपने भाई के प्रति प्रेम दिखाते हुए ऐसा निजी रूप में करना चाहिए। उसका उद्देश्य प्रेम और उसका लक्ष्य मेल करने का होना चाहिए। उसे अपराध के बारे में हर किसी को नहीं बताना चाहिए। ''प्रेम अनेक पापों को ढांप देता है'' (1पत. 4:8)। यदि हम किसी से प्रेम करते हैं तो हम उसके पापों को प्रगट नहीं करेंगे, हम उन्हें छिपाएंगे।

उसके द्वारा सामना करना उदार होने के साथ-साथ उसके प्रेम को दिखानेवाला होना चाहिए। उसे कुछ इस तरह से कहना चाहिए, ''भाई ख, में निश्चय ही अपने संबन्ध को महत्व देता हूं। लेकिन कुछ ऐसा हुआ है जिसने मेरे हृदय में तुम्हारे विरुद्ध एक दीवार बना दी है। मैं नहीं चाहता कि वह दीवार वहां बनी रहे, इसलिए मैं तुम से कहना चाहता हूं कि मैं क्यों यह सोचता रहूं कि तुमने मेरे विरुद्ध पाप किया है– जिससे हम मेल करने पर कार्य कर सकें। और यदि मैंने कुछ ऐसा किया है जिससे इस समस्या को बढ़ावा मिला है, तो मैं चाहता कि तुम मुझे बताओ।'' उसके बाद उसे भाई ख को दीनता के साथ अपराध के बारे में बताना चाहिए।

अधिकांश मामलों में, भाई ख को यह पता भी नहीं होगा कि उसने अपने भाई के विरुद्ध पाप किया है और जैसे ही उसे अपनी गलती के बारे में पता चलता है, वह क्षमा मांग लेता है। ऐसा होने पर भाई को तत्काल ही भाई ख को क्षमा कर देना चाहिए। अब मेल ने स्थान ले लिया है।

अन्य संभावित दृश्य है कि भाई 'ख' अपने भाई 'क' के विरुद्ध किये गए पाप को सही ठहराते हुए उससे कहता है कि वह भाई 'क' द्वारा उसके विरुद्ध किये गए पाप के प्रति केवल जवाब दे रहा था। यदि ऐसा था तो भाई 'ख' को भाई 'क' का सामना करना चाहिये था। लेकिन अब कम से कम मेल के संबंध में कुछ संवाद और आशा तो है।

इस तरह के मामलों में, अपराधी दलों को उस पर विचार-विमर्श करना चाहिए जो कुछ हुआ था, प्रत्येक को अपनी गलती के माप के अनुसार उसे स्वीकार करना चाहिए और उसके बाद एक दूसरे को क्षमा देनी व लेनी चाहिए। मेल को पूरा कर लिया गया है।

तीसरे दृश्य में भाई क और भाई ख मेल करने में असमर्थ हैं। इसी कारण उन्हें सहायता की ज़रूरत है, और यह चरण दो पर जाने का समय है।

चरण दो

Step Two

भाई क और भाई ख के लिए यह अच्छा होगा कि वे दोनों इस पर सहमत हों कि उन दोनों में मेल करने का कार्य किसे करना चाहिए। भाई 'ग' और 'घ' को 'क' और 'ख' के बारे में जानने के साथ-साथ उनसे प्रेम भी करना चाहिए, अर्थात् उन्हें अपने भेदभाव न करने की रीति के प्रति आश्वस्त करना चाहिए। और भाई 'ग' और 'घ' को भाई 'क' और 'ख' के बीच हुए झगड़े के बारे में बताया जाना चाहिए।

यदि भाई 'ख' इस संदर्भ में सहमत नहीं है, तो यह भाई 'क' पर निर्भर करेगा कि वह एक या दो अन्य व्यक्तियों की खोज करें, जो उनकी सहायता कर सकें।

यदि भाई 'ग' और 'घ' बुद्धिमान हैं, तो वे भाई 'क' और 'ख' के दृष्टिकोणों को सुने बिना कोई फैसला नहीं करेंगे। 'ग' और 'घ' के एक बार फैसला दे दिये जाने के पश्चात् क और 'ख' को उनके फैसले के अधीन हो जाना चाहिए, एक दूसरे से क्षमा मांगनी चाहिए; जैसा उनमें से किसी एक या दोनों के लिए प्रस्तावित किया गया होता है।

भाई 'ग' और 'घ' को अधिक निष्पक्षता दिखाने का प्रयास नहीं करना चाहिए और व्यक्तिगत हानि को न उठाते हुए इस तरह का प्रस्ताव देना चाहिए कि 'क' और 'ख' दोनों को ही पश्चात्ताप करने की ज़रूरत है, जबकि वास्तव में एक को ही ऐसा करना है। उन्हें जानना चाहिए कि चाहे भाई 'क' या 'ख' द्वारा उनके निर्णय को ठुकरा दिया जाए, इसे समस्त कलीसिया के सामने रखा जाएगा और उनका सामूहिक न्याय प्रत्येक के लिए प्रमाण होगा। 'ग' और 'घ' को 'क' और 'ख' के साथ संबन्ध बनाए रखने की परीक्षा का सामना करना पड़ता है, सच्चाई पर समझौता करने के द्वारा कि दो न्यायियों का एक से अधिक होना क्यों उत्तम है, क्योंकि वे एक दूसरे को सत्य में बढ़ावा दे सकते हैं। इसके अतिरिक्त, उनका निर्णय 'क' और 'ख' के सम्मुख एक बोझ के रूप में लाया जाता है।

चरण तीन

Step Three

यदि भाई 'क' और 'ख' में से कोई 'ग' और 'घ' के फैसले को ठुकरा दे, तो मामले को समस्त कलीसिया के सम्मुख रखा जाता है। यह तीसरा चरण कभी भी संस्थागत कलीसियाओं में नहीं किया जाता है क्योंकि यहां लोगों द्वारा किसी का भी

पक्ष लिए जाने पर झगड़े को उत्पन्न करेगा। यीशु ने स्थानीय कलीसियाओं के बड़े होने की इच्छा कभी नहीं की। यह छोटी मण्डली का परिवार– जहां हर कोई 'क' और 'ख' के बारे में जानता और उनकी चिंता करता है, चरण तीन के लिए पवित्रशास्त्रानुसार है। एक संस्थागत कलीसिया में, चरण तीन एक छोटे समूह के लोगों में होना चाहिए जो भाई 'क' और 'ख' को जानते व उनसे प्रेम करते हैं। यदि 'क' और 'ख' भिन्न स्थानीय संस्थाओं के सदस्य हैं तो दोनों की ओर से श्रेष्ठ सदस्य निर्णय लेने वाले दल के रूप में कार्य कर सकते हैं।

एक बार कलीसिया द्वारा निर्णय दे दिये जाने के पश्चात्, भाई 'क' और 'ख' को अवज्ञा के परिणामों को जानते हुए स्वयं को इसके अधीन कर देना चाहिए। क्षमा मांगी, क्षमा दी गई और मेल हुआ।

यदि 'क' और 'ख' में से कोई एक प्रस्तावित क्षमा से इन्कार कर दें तो उसे कलीसिया से बाहर कर देना चाहिए और कलीसिया में से किसी को भी उसके साथ सहभागिता नहीं रखनी चाहिए। प्रायः इस समय तक एक अपश्चात्तापी व्यक्ति अपनी ही मर्ज़ी से हट जाता है। यह उसके अपने आत्मिक परिवार के प्रेम में बने रहने की वचनबद्धता की कमी को दिखाता है।

एक सामान्य समस्या
A Common Problem

संस्थागत कलीसियाओं में लोग सामान्यता अपने झगड़ों का समाधान एक कलीसिया से दूसरी कलीसिया में जाने से करते हैं, जहां का पास्टर किसी भी कीमत पर अपने राज्य का निर्माण करना चाहता है और जिसका अन्य पास्टरों के साथ कोई वास्तविक संबंध नहीं होता। वह इस तरह के लोगों का स्वागत करता है और जब वे अपनी शोक भरी कहानियां उसे सुनाते हैं तो वह उनका पक्ष लेता है। यह नमूना मसीह द्वारा आज्ञा दिये गए मेल के चरणों को प्रभावहीन बनाता है। और सामान्यता यह अपराधी व्यक्ति के लिए महीनों या वर्षों का मामला होता है, जिनका स्वागत इस तरह के पास्टर अपनी कलीसिया में करते हैं। वे एक बार फिर से दूसरी कलीसिया में चले जाते हैं।

यीशु ने कलीसियाओं के छोटे होने की अपेक्षा की थी कि वह घरों में समा सकें और यह भी कि स्थानीय पास्टर/प्राचीन/अध्यक्ष एक देह में मिलकर कार्य करें। अतः, कलीसिया के एक सदस्य का बहिष्कार सभी कलीसियाओं से बहिष्कार को प्रभावित करेगा। प्रत्येक पास्टर/प्राचीन/अध्यक्ष का उत्तरदायित्व बनता है कि वह प्रत्येक आनेवाले मसीही से उसकी पूर्व कलीसियाई पृष्ठभूमि के बारे में पूछे और इसके पश्चात् यह निर्धारित करने को कि इस तरह के लोगों का स्वागत किया जाना चाहिए या नहीं वे उनकी पूर्व कलीसिया की अगुवाई से संपर्क करे।

एक पवित्र कलीसिया के लिए परमेश्वर की मंशा

God's Intention for a Holy Church

संस्थागत कलीसियाओं की एक अन्य सामान्य समस्या यह है कि ये सामान्यता बहुत से लोगों से मिलकर बनी होती हैं जो केवल दिखावे के लिए आते हैं, जिनका अन्य लोगों के प्रति कोई उत्तरदायित्व नहीं होता और यदि होता भी है तो बहुत कम, क्योंकि उनके संबन्ध पूर्णतया सामाजिक होते हैं। अत: किसी के भी विशेषकर पास्टरों के पास इस बात का कोई विचार नहीं होता कि वे अपना जीवन कैसे जीते हैं, और अपवित्र लोग, लगातार उन कलीसियाओं को कलंकित करते रहते हैं जिनमें वे भाग लेते हैं। बाहर से आनेवाले तब इस बात को न्याय करते हैं कि वे किन्हें मसीही मानते हैं जो कि अविश्वासियों से भिन्न नहीं होते।

यह प्रत्येक के लिए इस बात का एक पर्याप्त प्रमाण है कि संस्थागत कलीसियाओं की बनावट परमेश्वर की अपनी पवित्र कलीसिया के रूप में नहीं है। अपवित्र और पाखण्डी लोग मसीह के लिए निन्दा लाते हुए अक्सर विशाल संस्थागत कलीसियाओं में छिप जाते हैं। तौभी मत्ती 18:15-17 में जो कुछ हम पढ़ते हैं उसमें यीशु की स्पष्ट रूप से मंशा यह थी कि उनकी कलीसिया पवित्र लोगों से मिलकर बने जो कि स्वयं को शुद्ध रखने वाली देह के प्रति समर्पित सदस्य हों। संसार कलीसिया को देखेगा और उसकी (मसीह की) शुद्ध दुल्हन को भी। तथापि, वे आज एक महान वेश्या को देखते हैं, जो कि अपने पति के प्रति विश्वासयोग्य नहीं है।

स्वयं को शुद्ध रखने वाली ईश्वरीय मंशा वाली कलीसिया का प्रमाण उस समय दिखा जबा पौलुस ने कुरिन्थ की कलीसिया में एक जटिल समस्या को संबोधित किया। देह का एक स्वीकार किया गया सदस्य अपनी सौतेली मां के साथ एक व्यभिचारी संबंध में रह रहा था:

> यहां तक सुनने में आता है कि तुम में व्यभिचार होता है वरन ऐसा व्यभिचार जो अन्यजातियों में भी नहीं होता, कि एक मनुष्य अपने पिता की पत्नी को रखता है। और तुम शोक तो नहीं करते, जिससे ऐसा काम करनेवाला तुम्हारे बीच में से निकाला जाता, परन्तु घमण्ड करते हो। मैं तो शरीर के भाव से दूर था, परन्तु आत्मा के भाव से तुम्हारे साथ होकर, मानो उपस्थिति की दशा में ऐसा काम करनेवाले के विषय में यह आज्ञा दे चुका हूं कि जब तुम, और मेरी आत्मा, हमारे प्रभु यीशु की सामर्थ के साथ इकट्ठे हो, तो ऐसा मनुष्य, हमारे प्रभु यीशु के नाम से शरीर के विनाश के लिये शैतान को सौंपा जाए, ताकि उसकी आत्मा प्रभु यीशु के दिन में उद्धार पाए। मैंने अपनी पत्री में तुम्हें लिखा है, कि व्यभिचारी की संगति न करना। यह नहीं कि तुम बिलकुल

> इस जगत के व्यभिचारियों या लोभियों या अन्धेर करनेवालों या मूर्तिपूजकों की संगति न करो; क्योंकि इस दशा में तो तुम्हें जगत से निकल जाना ही पड़ता। मेरा कहना यह है कि यदि कोई भाई कहलाकर, व्यभिचारी, या लोभी, या मूर्तिपूजक या गाली देनेवाला, या पियक्कड़, या अन्धेर करनेवाला हो, तो उस की संगति मत करना, वरन ऐसे मनुष्य के साथ खाना भी न खाना क्योंकि मुझे बाहरवालों का न्याय करने से क्या काम? क्या तुम भीतरवालों का न्याय नहीं करते? परन्तु बाहरवालों का न्याय परमेश्वर करता है। इसलिए उस कुकर्मी को अपने बीच में से निकाल दो (1कुरि. 5:1-5, 9-13)।

मेल के चरणों के माध्यम से यहां इस विशिष्ट व्यक्ति को लेने की कोई ज़रूरत नहीं थी। पौलुस ने उसे एक ''तथाकथित भाई'' या एक ''दुष्ट व्यक्ति'' कहकर संबोधित किया है।

इसके अतिरिक्त, कुछ पदों के बाद पौलुस ने लिखा,

> क्या तुम नहीं जानते कि अन्यायी लोग परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे? धोखा न खाओ, न वेश्यागामी, न मूर्तिपूजक, न परस्त्रीगामी, न लुच्चे, न पुरुषगामी, न चोर, न लोभी, न पियक्कड़, न गाली देनेवाले, न अन्धेर करनेवाले परमेश्वर के राज्य के वारिस होंगे (1कुरि. 6:9-10)।

स्पष्ट है कि पौलुस ने सही विश्वास किया कि जो लोग कुरिन्थ की कलीसिया के पुरुष के समान व्यभिचारी हैं उन्होंने अपने विश्वास को झूठ से धोखा दिया है। इस तरह के लोगों के साथ न तो, भाइयों के समान व्यवहार करना चाहिए और न ही उसे मेल के चार चरणों से लेकर जाना चाहिये। उन्हें ''शैतान को देते हुए'' बहिष्कृत कर देना चाहिए, जिससे कलीसिया उनके स्वार्थ को बढ़ावा न दे और ''प्रभुयीशु के दिन में उद्धार पाने को'' उन्हें पश्चात्ताप की ज़रूरत अनुभव हो (1कुरि. 5:5)।

आज संसार की विशाल कलीसियाओं में, कई बार सैकड़ों लोग मसीही के रूप में दिखते हैं, लेकिन वे बाइबल मानदण्ड के अनुसार गैर विश्वासी हैं जिनका बहिष्कार कर देना चाहिए। पवित्रशास्त्र हमें स्पष्ट रूप से दिखाता है कि कलीसिया की अपने में से उन लोगों को निकालने की ज़िम्मेदारी है जो व्यभिचारी, समलिंगगामी, पियक्कड़ इत्यादि हैं। तौभी, आज इस तरह के लोग ''अनुग्रह'' के ध्वज के अन्तर्गत ऐसे कलीसियाई समूहों में रखे जाते हैं जहां इसी तरह की समस्याओं में उन्हें अन्य ''विश्वासियों'' द्वारा उत्साहित किया जा सकता है। यह यीशु मसीह के सुसमाचार की जीवन परिविर्तित करने वाली सामर्थ के प्रति एक अपराध है।

पतित अगुवे
Fallen Leaders

अन्त में, एक पश्चात्तापी अगुवे के गंभीर पाप में गिरने पर (जैसे व्यभिचार) क्या उसे उसी समय उसके पद पर पुन: बैठाना चाहिए? यद्यपि परमेश्वर पश्चात्तापी अगुवे को उसी समय क्षमा कर देगा (और इसी तरह से कलीसिया को भी), तथापि पतित अगुवा उस व्यक्ति के विश्वास को खो देगा जिसकी वह सेवा करता है। *भरोसा एक ऐसी चीज़ है जिसे अर्जित करना चाहिए।* इसलिए पतित अगुवों को स्वेच्छा से स्वयं को उन पदों से हटा देना चाहिए और अपनी विश्वासयोग्यता को प्रमाणित करने तक स्वयं का आत्मिक निरीक्षण किये जाने को सौंप देना चाहिए। जो भरोसे को फिर से पाने के लिए छोटे तरीकों से दीनता के साथ सेवा करने को तैयार नहीं हैं उन्हें स्वयं को अगुवों के रूप में देह में किसी के प्रति समर्पण नहीं करना चाहिए।

सारांश में
In Summary

जिस तरह से शिष्य निर्माता सेवकों को सब ''प्रकार की सहनशीलता और शिक्षा के साथ उलाहना देने और डांटने और समझाने को बुलाया गया है'' (2तीमु 4:2), आइये हम अपनी बुलाहट से शर्माए नहीं। आइये हम अपने शिष्यों को करुणापूर्ण धैर्य, उदार रूप में सामना करने, आवश्यकता पड़ने पर दूसरों की सहायता से अतिरिक्त सामना करने और जब कभी क्षमा करने को कहा जाए तो सच्चे प्रेम से एक दूसरे को क्षमा करना सिखाएं। यह उस झूठी क्षमा से कितना अच्छा है जिससे टूटे संबंधों में कोई सुधार नहीं होता। आइये परमेश्वर की कलीसिया को पवित्र और शुद्ध रखने व उसके नाम को स्तुति देने को प्रत्येक क्षेत्र में परमेश्वर की आज्ञा का पालन करें।

सामना करने और कलीसियाई अनुशासन के संबंध में अतिरिक्त अध्ययन के लिए देखें रोमि. 16:17-18; 2 कुरि. 13:1-3; गल. 2:11-14; 2 थिस्स. 3:6, 14-15; 1तीमु. 1:19-20, 5:19-20. तीतु. 3:10-11; याकू. 5:19-20; 2यूह. 10-11।